{ एवमपुव्वाणि अपुव्वाणि जाव उक्कस्सिया ट्ठिदि त्ति।।२७०।। }

< इस प्रकार उत्कृष्ट स्थिति तक अपूर्व अपूर्व स्थितिबन्धाध्यवसानस्थान होते हैं ।।२७०।। >

{ एवं उत्तविधाणेण अपुव्वाणि अपुव्वाणि चेव ट्ठिदिबंधज्झवसाणट्ठाणाणि सव्वट्ठिदिविसेसेसु होदूण गच्छंति जाव उक्कस्सट्ठिदि त्ति। सव्वट्ठिदिविसेसेसु पुव्वट्ठिदिबंधज्झवसाणट्ठाणाणि वि अत्थि, ताणि च अभणिदूण अपुव्वाणि चेव अत्थि, त्ति किमट्ठं वुच्चदे? ण, एवमिदि वयणादो चेव पुव्वाणं अत्थित्तसिद्धीदो। एवं वयणादो चेव पुव्वाणं व अत्थित्तसिद्धीए संतीए अपुव्वाणं पि णिद्देसो किमट्ठं कदो? ण, अपुव्वपरिणामअत्थित्तपओजणत्तेण तप्पदुप्पायणे दोसाभावादो।}

< इस प्रकार उक्त प्रक्रियासे उत्कृष्ट स्थितितक सब स्थितिविशेषोंमें होकर अपूर्व ही अपूर्व स्थितिबन्धाध्यवसानस्थान होते जाते हैं।

शंका -- सब स्थितिविशेषोंमें जब पूर्व स्थितिबन्धाध्यवसानस्थान भी होते हैं, तब उन्हें न कहकर 'अपूर्व ही हैं' ऐसा किसलिये कहा जाता है?

समाधान -- नहीं, क्योंकि 'एवं' अर्थात् 'इसी प्रकार' ऐसा कहनेसे ही पूर्व स्थितिबन्धाध्यवसानस्थानोंका अस्तित्व सिद्ध हो जाता है।

शंका -- यदि 'एवं' पदका निर्देश करनेसे पूर्व ही स्थितिबन्धाध्यवसानस्थानोंका अस्तित्व सिद्ध हो जाता है तो फिर अपूर्व स्थितिबन्धाध्यवसानस्थानोंका निर्देश किसलिये किया गया है?

समाधान -- नहीं, क्योंकि यहाँ अपूर्व परिणामोंके अस्तित्वका प्रयोजन होनेसे उनके कहनेमें कोई दोष नहीं है। >

{ जहण्णट्ठिदीए पढमं उवरि केण वि सरिसं ण होदि। बिदियखंडं समउत्तरजहण्णट्ठिदीए पढमज्झवसाणखंडेण सरिसं। तदियखंडं दूसमउत्तरजहण्णट्ठिदीए पढमखंडेण सरिसं। चउत्थखंडं तिसमउत्तरजहण्णट्ठिदीए पढमखंडेण सरिसं। एवं णेयव्वं जाव णिव्वग्गणकंडयचरिमसमओ त्ति। तदो उवरिमसमए जहण्णट्ठिदिअज्झवसाणाणमणुक्कट्ठी

वोच्छिज्जदि, तत्थ एदेहि सरिसपरिणामाभावादो। एवं सव्वट्ठिदिविसेससव्वज्झवसाणाणं पादेक्कमणुक्कट्ठिवोच्छेदो परूवेदव्वो त्ति भावत्थो। }

< जघन्य स्थितिका प्रथम खण्ड आगे किसीके भी सदृश नहीं है। उसका द्वितीय खण्ड एक समय अधिक जघन्य स्थितिके प्रथम अध्यवसानखण्डके सदृश होता है। जघन्य स्थितिके अध्यवसानोंका तृतीय खण्ड दो समय अधिक जघन्य स्थितिके प्रथम अध्यवसानखण्डके सदृश होता है। चतुर्थ खण्ड तीन समय अधिक जघन्य स्थितिके प्रथम अध्यवसानखण्डके सदृश होता है। इस प्रकार निर्वर्गणाकाण्डके अन्तिम तक ले जाना चाहिये। उससे आगेके समयमें जघन्य स्थितिके अध्यवसानोंके अनुकृष्टिका व्युच्छेद हो जाता है, क्योंकि, वहाँ इनके सदृश परिणामोंका अभाव है। इस प्रकारसे सब स्थितिविशेषोंके सब अध्यवसानोंमेंसे प्रत्येकमें अनुकृष्टिके व्युच्छेदकी प्ररूपणा करनी चाहिये। यह उक्त कथनका भावार्थ है। >

{ संपहि अपुणरुत्तज्झवसाणपरूवणा कीरदे। तं जहा -- जहण्णट्ठिदिमादिं कादूण जाव दुचरिमटट्ठिदिं कादूण जाव दुचरिमट्ठिदि त्ति ताव सव्वट्ठिदिविसेस** (ता प्रतौ 'सव्वट्ठिदिविसेसस्स') सव्वज्झवसाणाणं सव्वपढमखंडाणि अपुणरुत्ताणि। उक्कस्सट्ठिदीए सव्वखंडाणि अपुणरुत्ताणि चेव। सेस-दुचरिमादिट्ठिदीणं बिदियादिखंडाणि पुणरुत्ताणि, एदेहि समाणपरिणामाणमपुणरुत्तपरिणामेसु उवलंभादो। }

< अब अपुनरुक्त अध्यवसानोंकी प्ररूपणा करते हैं। वह इस प्रकार है -- जघन्य स्थितिको आदि लेकर द्विचरम स्थिति तक सब स्थितिविशेषोंके सभी अध्यवसानस्थान सम्बन्धी सब प्रथम खण्ड अपुनरुक्त हैं। उत्कृष्ट स्थितिके सब खण्ड अपुनरुक्त ही हैं। शेष द्विचरम आदि स्थितियोंके द्वितीयादिक खण्ड पुनरुक्त हैं, क्योंकि, इनके समान परिणाम अपुनरुक्त परिणामों में पाये जाते हैं। >

{ एवं सत्तण्णं कम्माणं।।२७१।। }

<	इसी प्रकार शेष सात कर्मोंके विषयमें अनुकृष्टिका कथन करना चाहिये।।२७१।।
>

{	जहा णाणावरणीयस्स अणुक्कट्ठी परूविदा तहा सत्तण्णं कम्माणं परूवेदव्वं। णवरि आउअस्स जहण्णट्ठिदीए णिव्वग्गणमेत्तअज्झवसाणखंडाणि पुव्वं व पढमखंडप्पहुडि विसेसाहियाणि होंति। समउत्तरजहण्णट्ठिदिप्पहुडिसव्वज्झवसाणखंडाणि अण्णोण्णं पेक्खिदूण जहाकमेण विसेसाहियाणि चेव। किंतु तत्थ समयाहियजहण्णट्ठिदीए दुचरिमखंडादो चरिमखंडमायामेण असंखेज्जगुणं। तदुवरिट्ठिदीए पुण तिचरिमखंडादो दुचरिमखंडमसंखेज्जगुणं। तदो चरिमखंडमसंखेज्जगुणं। एवं णेदव्वं जाव णिव्वग्गणकंडयदुचरिमसमओ त्ति। पुणो तदुवरिमट्ठिदिप्पहुडि जाव उक्कस्सट्ठिदि त्ति ताव सव्वखंडाणि अण्णोण्णं पेक्खिदूण आयामेण असंखेज्जगुणाणि होंति त्ति घेत्तव्वं। एत्थ वि अणुक्कट्ठिवोच्छेदो पुव्वं व परूवेदव्वो। एवमणुक्कट्ठी समत्ता।	}

<	जिस प्रकार ज्ञानावरणीयके विषयमें अनुकृष्टिकी प्ररूपणा की है, उसी प्रकार अन्य सात कर्मोंके सम्बन्धमें अनुकृष्टिकी प्ररूपणा करना चाहिये। विशेष इतना है कि आयुकी जघन्य स्थितिके निर्वर्गणाकाण्डक प्रमाण अध्यवसानखण्ड पूर्वके ही समान प्रथम खण्डको आदि लेकर उत्तरोत्तर विशेष अधिक होते हैं। एक समय अधिक जघन्य स्थितिको आदि लेकर सब अध्यवसानखण्ड परस्परकी अपेक्षा यथाक्रमसे विशेष अधिक ही हैं। परन्तु उनसे एक समय अधिक जघन्य स्थितिके द्विचरम खण्डसे अन्तिम खण्ड आयामकी अपेक्षा असंख्यातगुणा है। उससे आगेकी स्थितिके त्रिचरम खण्डकी अपेक्षा द्विचरम खण्ड असंख्यातगुणा है। उससे अन्तिम खण्ड असंख्यातगुणा है। इस प्रकार निर्वर्गणाकाण्डके द्विचरम समय तक ले जाना चाहिये। फिर उससे आगेकी स्थितिसे लेकर उत्कृष्ट स्थितितक सब खण्ड एक दूसरेकी अपेक्षा आयामसे असंख्यातगुणे होते हैं, ऐसा समझना चाहिये। यहाँ भी अनुकृष्टिके व्युच्छेदकी पूर्वकेही समान प्ररूपणा करना चाहिये। इस प्रकार अनुकृष्टिका कथन समाप्त हुआ।	>

{ तिव्व-मंददाए णाणावरणीयस्स जहण्णियाए ट्ठिदीए जहण्णयं ट्ठिदिबंधज्झवसाणट्ठाणं सव्वमंदाणुभागं ** (सम्प्रति स्थितिसमुदाहारे या प्राक् तीव्र-मन्दता नोक्ता साभिधीयते -- अणंतेत्यादि। तद्यथा -- ज्ञानावरणीयस्य जघन्यस्थितौ जघन्यस्थितिबन्धाध्यवसायस्थान सर्वमन्दानुभावम्। ततस्तस्यामेव जघनस्थितौ उत्कृष्टामध्यवसायस्थानमनन्तगुणम्। ततोऽपि द्वितीयस्थितौ जघन्यं स्थितिबन्धाध्यवसायस्थानमनन्तगुणं। ततोऽपि तस्यामेव द्वितीयस्थितौ उत्कृष्टमनन्तगुणम्। एवं प्रतिस्थिति जघन्यमुत्कृष्टं च स्थितिबन्धाध्यवसायस्थानमनन्तगुणतया तावद्वक्तव्यं यावदुत्कृष्टायां स्थितौ चरमं स्थितिबन्धाध्यवसायस्थानमनन्तगुणम् (१-३।। क. प्र. (म. टी.) १, ८९.) ।।२७२।। }

< तीव्र-मन्दताकी अपेक्षा ज्ञानावरणीयकी जघन्य स्थिति सम्बन्धी जघन्य स्थितिबन्धाध्यवसानस्थान सबसे मन्द अनुभागवाला होता है।।२७२।। >

{ सव्वट्ठिदीसु पुणरुत्तट्ठिदिबंधज्झवसाणट्ठाणाणि अवणिय अपुणरुत्ताणि ** (अ-आ-का प्रतिषु '-- पुणरुत्ताणि' इति पाठः।) घेत्तूण एदमप्पाबहुगं वुच्चदे। सव्वमंदाणुभागमिदि वुत्ते सव्वजहण्णसत्तिसंजुत्तमिदि घेत्तव्वं। सेसं सुगमं। }

< सब स्थितियोंमें पुनरुक्त स्थितिबन्धाध्यवसानस्थानोंको छोड़कर और अपुनरुक्तोंको ग्रहण करके यह अल्पबहुत्व कहा जा रहा है। 'सव्वमंदाणुभाग' ऐसा कहनेपर सबसे जघन्य शक्तिसे संयुक्त है, ऐसा ग्रहण करना चाहिये। शेष कथन सुगम है। >

{ तिस्से चेव उक्कस्समणंतगुणं ।।२७३।। }

< उसीका उत्कृष्ट स्थितिबन्धआध्यवसानस्थान अनन्तगुणा है।।२७३।। >

{ तिस्से चेव जहण्णट्ठिदीए पढमखंडस्स अपुणरुत्तस्स उक्कस्सपरिणामो अणंतगुणो, संखेज्जलोगमेत्तछट्ठाणाणि उवरि चडिदूण ट्ठिदत्तादो। चरिमखंडुक्कस्सपरिणामो ण गहिदो त्ति

कधं णव्वदे? जहण्णट्ठिदिउक्कस्सपरिणामादो समयाहियजहण्णट्ठिदीए जहण्णपरिणामो अणंतगुणो त्ति सुत्तणिद्देसादो णव्वदे। }

<उसी जघन्य स्थितिके अपुनरुक्त प्रथम खण्डका उत्कृष्ट परिणाम अनन्तगुणा है, क्योंकि, वह असंख्यात लोक मात्र छह स्थान आगे जाकर स्थित है।

शंका -- अन्तिम खण्डका उत्कृष्ट परिणाम नहीं ग्रहण किया गया है, यह कैसे जाना जाता है?

समाधान -- जघन्य स्थितिके उत्कृष्ट परिणामसे एक समय अधिक जघन्यस्थितिका जघन्य परिणाम अनन्तगुणा है, ऐसा सूत्रमें निर्देश किया जानेसे उसका परिज्ञान होता है। >

{ बिदियाए ट्ठिदीए जहण्णयं ट्ठिदिबंधज्झवसाणट्ठाणमणंतगुणं।।२७४।। }

< द्वितीय स्थितिका जघन्य स्थितिबन्धाध्यवसानस्थान अनन्तगुणा है।।२७४।।

>

{ पुव्विल्लउक्कस्सपरिणामो उव्वंको, एसो जहण्णपरिणामो अट्ठंको त्ति काऊण हेट्ठिमउक्कस्सपरिणामं सव्वजीवरासिणा गुणिदे उवरिमट्ठिदिजहण्णपरिणामो होदि, तेण अणंतगुणत्तं ण विरुज्झदे। उवरिं पि उक्कस्सपरिणामादो जत्थ जहण्णपरिणामो अणंतगुणो त्ति वुच्चदि तत्थ एवं चेव कारणं वत्तव्वं। }

< पूर्वका उत्कृष्ट परिणाम ऊर्वंक और यह जघन्य परिणाम अष्टांक है, ऐसा करके अधस्तन उत्कृष्ट परिणामको सर्व जीवराशिसे गुणित करनेपर आगेकी स्थितिका जघन्य परिणाम होता है, इसी कारण उसके अनन्तगुणे होनेमें कोई विरोध नहीं है। आगे भी जहाँपर उत्कृष्ट परिणामकी अपेक्षा जघन्य परिणाम अनन्तगुणा है, ऐसा कहा जाता है वहाँपर भी यही कारण बतलाना चाहिये। >

{ तिस्से चेव उक्कस्समणंतगुणं ।।२७५।।}

< उसी स्थितिका उत्कृष्ट परिणाम अनन्तगुणा है।।२७५।।>

{ असंखेज्जलोगमेत्तछट्ठाणाणि उवरि चडिदूण ट्ठिदत्तादो। }

< क्योंकि, वह जघन्य परिणामसे असंख्यात लोक प्रमाण छह स्थान आगे जाकर स्थित है। >

{ तदियाए ट्ठिदीए जहण्णयं ट्ठिदिबंधज्झवसाणट्ठाणमणंतगुणं।।२७६।। }

< उससे तृतीय स्थितिका जघन्य स्थितिबन्धाध्यवसानस्थान अनन्तगुणा है।।२७६।। >

{ कारणं सुगमं, पुव्वं परूविदत्तादो। }

< इसका कारण सुगम है, क्योंकि, वह पूर्वमें बतलाया जा चुका है। >

{ तिस्से चेव उक्करस्सयमणंतगुणं ।।२७७।। >

< उसी स्थितिका उत्कृष्ट परिणाम उससे अनन्तगुणा है।।२७८।। >

{ असंखेज्जलोगमेत्तछट्ठाणाणि उवरि चडिदूण ट्ठिदत्तादो। }

< क्योंकि, वह उससे असंख्यात लोक मात्र छह स्थान आगे जाकर स्थित है। >

{ एवमणंतगुणा जाव उक्कस्सट्ठिदि त्ति।।२७८।। }

< इस प्रकार उत्कृष्ट स्थिति तक वे अनन्तगुणे हैं।।२७८।। >

{ एवं पुव्वुत्तकमेण अणंतगुणाए सेडीए णेदव्वं जाव उक्कस्सट्ठिदि त्ति। णवरि उक्कस्सियाए ट्ठिदीए जहण्णादो उक्कस्समणंतगुणमिदि वुत्ते चरिमखंडुक्कस्सपरिणामो अणंतगुणो त्ति घेत्तव्वं।}

< इस प्रकार अर्थात् पूर्वोक्त क्रमसे उत्कृष्ट स्थिति तक अनन्तगुणित श्रेणिसे ले जाना चाहिये। विशेष इतना है कि उत्कृष्ट स्थितिके जघन्य परिणामकी अपेक्षा उत्कृष्ट परिणाम अनन्तगुणा है, ऐसा कहनेपर अन्तिम खण्डका उत्कृष्ट परिणाम अनन्तगुणा है, ऐसा ग्रहण करना चाहिये। >

{ एवं सत्तण्णं कम्माणं।।२७९।। }

< इसी प्रकार शेष सात कर्मोंके विषयमें तीव्र-मन्दताके अल्पबहुत्वको कहना चाहिये। >

{ जहा णाणावरणीयस्स तिव्वमंददाए अप्पाबहुगं परूविदं तहा सत्तण्णं कम्माणं परूवेदव्वं, विसेसाभावादो। एवं तिव्व-मंददा त्ति समत्तमणुयोगद्दारं। एवं ट्ठिदिसमुदाहारो समत्तो। एवं ट्ठिदिबंधज्झवसाणट्ठाणपरूवणा समत्ता। एवं वेयणाकालविहाणे त्ति समत्तमणुयोगद्दारं। }

< जिस प्रकार ज्ञानावरणीय कर्मके विषयमें तीव्र-मन्दताके अल्पबहुत्वकी प्ररूपणा की गयी है, उसी प्रकार शेष सात कर्मोंके विषयमें कहना चाहिये, क्योंकि, वहाँ उसमें कोई विशेषता नहीं है। इस प्रकार तीव्र-मन्दता अनुयोगद्वार समाप्त हुआ। इस प्रकार स्थितिसमुदाहार समाप्त हुआ। इस प्रकार स्थितिबन्धाध्यवसान प्ररूपणा समाप्त हुई।

इस प्रकार वेदनाकालविधान अनुयोगद्वार समाप्त हुआ। >

*****